मैं परीक्षा के लिए तैयार हूँ

लेकिन...

पर हमारे चैनल:
Vaidic Physics
से जुड़ें
https://bit.ly/3M1R9eS

/vaidicphysics www.vaidicphysics.org

Vaidik Rasmi Theory

लेकिन...

पहले महर्षि ऐतरेय
महिदास जी को बुलाओ।

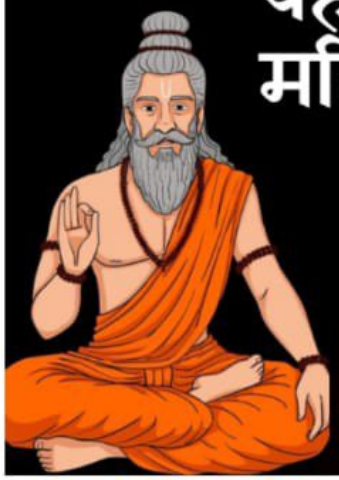

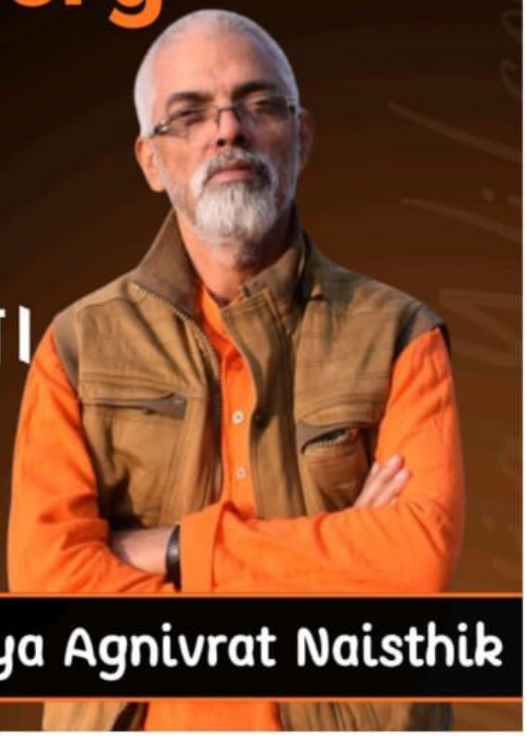

Acharya Agnivrat Naisthik

वैदिक रश्मि सिद्धांत

📌 *वैदिक रश्मि थ्योरी का परीक्षण एवं उस पर प्रश्न करने का अधिकार किसका?— एक स्पष्ट और शास्त्रीय दृष्टिकोण*

> *वैदिक रश्मि थ्योरी पर प्रश्न करने से पहले किसी को ब्राह्मण-ग्रंथों का भाष्यकार बनना पड़ेगा या महर्षि ऐतरेय महिदास जैसा बनना पड़ेगा—आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक*

नैष्ठिक जी का यह एक आश्चर्यजनक तर्क है।

-- जबकि सच्चाई यह है कि सोशल मीडिया के युवा, न्यूज़ चैनलों के एंकर, बिना व्याकरण, बिना शास्त्रीय अध्ययन के उनसे जो सामान्य प्रश्न पूछते हैं, उनमें तो नैष्ठिक जी सहज हैं।

लेकिन आर्यसमाज के वे विद्वान् जो संस्कृत भाषा, व्याकरण, भाषा-विज्ञान और दर्शन के अच्छे पंडित हैं, वे यदि नैष्ठिक जी के द्वारा किए गए ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य का भाषा, दर्शन व विज्ञान के संदर्भ में परीक्षण करना चाहें तो नैष्ठिक जी अत्यंत असहज हैं। वे परीक्षण के लिए, संवाद के लिए, शास्त्रार्थ के लिए तैयार ही नहीं होते।
आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में क्या बिना परीक्षण के बात स्वीकार कर ली जाती है? जो विद्वान् सत्य को समझने समझाने के लिए तर्क-वितर्क व परीक्षण करें तो, क्या उन्हें विरोधी समझ लिया जाता है?? क्या ऐसे होगी वेद-विज्ञान की विश्व में स्थापना???

* *महर्षि दयानन्द ने स्वयं वेदांत पर भाष्य नहीं लिखा, फिर भी शंकराचार्य के भाष्य का तर्कपूर्ण खंडन और समीक्षा की।*

इस दृष्टि से–
“पहले भाष्य करो, फिर प्रश्न, परीक्षण करो” यह तर्क नहीं, कुतर्क है।

नैष्ठिक जी के प्रिय शिष्य विशाल आर्य जी की अंग्रेज़ी भले ही साधारण रही हो, फिर भी उन्होंने आधुनिक विज्ञान का अध्ययन कर लिया —क्योंकि वे उन वैज्ञानिक सिद्धांतों को पढ़ रहे थे
जो पहले ही भाषा, परिभाषा और सत्यापन की कसौटी से गुजर चुके थे। इसलिए वहाँ कोई यह नहीं कह सकता कि,
"पहले तुम इंग्लिश के विद्वान् बनो, फिर फिज़िक्स पढ़ो" —
क्योंकि विज्ञान की भाषा पहले ही मानकीकृत और प्रमाणित है।

किंतु नैष्ठिक जी जिस *रश्मि थ्योरी* को ब्राह्मण ग्रंथ आदि शास्त्रों से निकाल रहे हैं, उसको भी तो परीक्षा की कसौटी से गुजरना पड़ेगा। जो ग्रंथ जटिल संस्कृत में हैं, जहाँ हर निष्कर्ष धातु, प्रत्यय, विभक्ति, व्याकरण व भाषा विज्ञान के आधार पर होता है। वहां यदि कोई संस्कृत, व्याकरण और भाषा-विज्ञान का मर्मज्ञ व्यक्ति नैष्ठिक जी से शब्दार्थ, अनुवाद और निष्कर्ष पर प्रश्न करता है, तो वह पूर्णतः अधिकारी है, उसका प्रश्न करना न्यायसंगत है। ऐसे आधिकारिक विद्वानों को अयोग्य कह

कर संवाद/शास्त्रार्थ के लिए सामने आने के लिए तैयार ही न होना, भगोड़ापन नहीं तो और क्या है???

- यदि *रश्मि थ्योरी (Rashmi theory)* केवल नैष्ठिक जी के निजी विचार-रचना होती, तो बात अलग थी।

लेकिन जब नैष्ठिक जी इसे वेद, ब्राह्मण ग्रंथ और संस्कृत शास्त्रों पर आधारित बता रहे हैं, तो वहाँ भाषा-विज्ञान, व्याकरण, दर्शन आदि की अनिवार्यता स्वतः उपस्थित हो जाती है। विशेषकर तब जब नैष्ठिक जी और उनके मानने वाले जन गुरुकुलों और विद्वानों से यह अपेक्षा आग्रह रखते हों कि उनकी रश्मि-थ्योरी सभी गुरुकुलों में पढ़ाई जाए और अन्य आर्य विद्वान् उनकी खोज को पढ़ें व मानें। जो इनके विज्ञान को नहीं मानते वे वेद-विरोधी हैं, उनसे ईर्ष्या रखते हैं, अहंकारी हैं।

〰〰〰〰〰〰〰〰〰

📌 /_*नैष्ठिक जी की रश्मि थ्योरी का परीक्षण करने के तीन वैध अधिकारी*_/

1️⃣ *संस्कृत भाषा, भाषा-विज्ञान और व्याकरण के मर्मज्ञ विद्वान्*

_क्योंकि *रश्मि थ्योरी* को वेद, ब्राह्मण और संस्कृत ग्रंथों पर आधारित बताया जाता है।_

इसलिए संस्कृत, व्याकरण और भाषा-विज्ञान का विद्वान् इसके अनुवाद, अर्थ और निष्कर्षों पर पूरी तरह प्रश्न करने का अधिकारी है, चाहे उसने स्वयं कोई ब्राह्मण-भाष्य न लिखा हो।

2️⃣ *दार्शनिक विद्वान्*

_रश्मि थ्योरी को एक दार्शनिक सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।_

इसलिए योग, सांख्य, वेदान्त और तर्कशास्त्र के विद्वान् इसकी तात्त्विक संगति, प्रमाण और निष्कर्षों पर समीक्षा और प्रश्न करने के अधिकारी हैं।

3️⃣ *वैज्ञानिक अधिकार*

_नैष्ठिक जी इसे विज्ञान, ऊर्जा, तरंग सिद्धांत आदि से जोड़ते हैं।_

तो कोई भी आधुनिक वैज्ञानिक या विज्ञान पढ़ा हुआ, चाहे वह संस्कृत न जानता हो, इसके वैज्ञानिक मॉडल, प्रयोग और दावों पर वैज्ञानिक मूल्यांकन का अधिकारी है।

ठठ ठठ ठठ ठठ ठठ ठठ ठठ ठठ

अधिकारी विद्वानों को यह कह देना कि
> *तुम योग्य नहीं हो इसलिए हम चर्चा नहीं करेंगे।*

— यह तर्क नहीं, कुतर्क है, भगोड़ापन है।

उदाहरण के लिए

यदि कोई अथर्ववेद का मनमाना भाष्य करके वेद में साकार ईश्वर और जादू टोना सिद्ध कर दे और जब कोई विद्वान् प्रश्न उठाए कि—
_*"वेद में साकार ईश्वर कहाँ है? जादू टोना कहां है??*

तब वह व्यक्ति विद्वान् से कहे कि पहले तुम अथर्ववेद या किसी अन्य वेद का भाष्य करके दिखाओ तभी मेरे भाष्य का परीक्षण करने के अधिकारी होओगे –
"पहले तुम भी भाष्य करो, फिर पूछो।"
तो यह न्याय नहीं, अन्याय होगा। तर्क नहीं कुतर्क होगा। मौलिक बातों को जानने वाला, सिखाने-पढ़ाने वाला हर व्यक्ति परीक्षा करने का अधिकारी होगा।

सत्यार्थ प्रकाश को गहराई से पढ़ा हुआ एक स्वाध्यायशील व्यक्ति भी दार्शनिक मान्यताओं का परीक्षण करने का अधिकारी हो सकता है।

* *स्वामी दयानंद सरस्वती भी पादरियों से, मौलवियों से, पण्डों से, सबसे शास्त्रार्थ और प्रश्नोत्तरी करते थे। कभी यह नहीं कहा कि, वे योग्य ही नहीं हैं।*

🔍 /_*न्यायपूर्ण समाधान*_/
रश्मि थ्योरी का मूल्यांकन इन तीन स्पष्ट स्तरों पर होना चाहिए –

1️⃣ *भाषा एवं वैज्ञानिक मीमांसा*

पाणिनीय व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण ग्रंथ एवं मीमांसा दर्शन के आधार पर।

2️⃣ *दार्शनिक मीमांसा*

योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदांत और महर्षि दयानन्द के प्रकृति व सृष्टि सिद्धांत के आधार पर।

3️⃣ *वैज्ञानिक मीमांसा*

आधुनिक भौतिकी, ऊर्जा और तरंग सिद्धांत के आधार पर।

यदि यह त्रिस्तरीय समीक्षा तर्कसंगत और पारदर्शी हो, तो युवा पीढ़ी तर्क भी सीखेगी और शास्त्रीय मर्यादा भी।

यक्ष प्रश्न-

क्या आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक अन्य इच्छुक विद्वानों से संवाद/शास्त्रार्थ करने के बाद, उन्हें संतुष्ट या निरुत्तर करके ही उन्हें अपनी बात मनवाने का न्यायपूर्ण आग्रह कर सकेंगे??? क्या वेद विज्ञान की प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक नहीं है ?????

ओ३म्